SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 10

सामाजिक विज्ञान

भारत और समकालीन विश्व - 2

अध्याय - 3

भूमंडलीकृत विश्व का बनना

भाग - 4

Pritesh Joshi

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

गिरमिटिया मजदूर



क्यों

कृषि ↓

इस बारे में उन्हें सही जानकारी नहीं दी जाती थी।

- बहुत सारे श्रमिकों को तो यह भी नहीं बताया जाता था कि उन्हें लंबी समुद्री यात्रा पर जाना है।
- अगर कोई मजदूर अनुबंध के लिए राजी नहीं होता था तो एजेंट उसका अपहरण तक कर लेते थे।
- 19वीं सदी की इस अनुबंध व्यवस्था को लोगों ने 'नई दास प्रथा' का भी नाम दिया है।
- बागानों में या कार्यस्थल पर पहुंचने के बाद मजदूरों को पता चलता था कि वे जैसी उम्मीद कर रहे थे, वहां वैसे हालात नहीं थे।
- नई जगह का जीवन एवं कार्यस्थितियां कठोर थीं और मजदूरों के पास कोई कानूनी अधिकार भी नहीं थे।
- इन सबके बावजूद मजदूरों ने जिंदगी बसर करने के अपने तरीके ढूंढ निकाले।
- बहुत सारे तो भाग कर जंगलों में चले गये। अगर ये मजदूर पकड़े जाते थे तो उन्हें भारी सजा दी जाती थी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q. 19वी सदी को नई दास प्रथा। (किसे कहा जाता था?

* समस्या।

- बहुतों ने अपनी पुरानी और नई संस्कृतियों का समिश्रण करके आत्माभिव्यक्ति (मन के अनुभव व्यक्त करना) के नये तरीके खोज लिये थे।
- त्रिनिदाद में मुहर्रम के सालाना जुलूस को एक विशाल उत्सवी मेले के रूप में मनाया जाने लगा जिसका नाम 'होसे' (इमाम हुसैन के नाम पर) रख दिया गया। जिसमें सभी धर्मों के मजदूर हिस्सा लेते थे।
- इसी प्रकार रास्ताफरियानवाद नामक एक विद्रोही धर्म (जिसे जमैका के रैगे गायक बॉब मार्ले ने ख्याति के शिखर पर पहुंचा दिया था) में भारतीय श्रमिकों एवं कैरेबियन लोगों के बीच संबंधों की झलक देखी जा सकती थी।
- त्रिनिदाद और गुयाना में मशहूर 'चटनी म्यूजिक' भी भारतीय श्रमिकों की रचनात्मक अभिव्यक्ति का उदाहरण है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मजदूर + त्रिनिदाद

- इस सांस्कृतिक समागम में अलग-अलग स्थानों की चीजें आपस में घुल मिल जाती थी तथा उनकी मूल पहचान गुम हो जाती थी और नया रूप सामने आता था।
- ज्यादातर श्रमिक अनुबंध समाप्त हो जाने के बाद भी वापस नहीं लौटे। कुछ वापस लौटे भी तो कुछ समय बिताने के बाद अपने उन नये ठिकानों पर वापस चले गये।
- इसी कारण से इन देशों में भारतीय मूल के लोगों की संख्या बहुत ज्यादा पाई जाती है।
- नोबेल पुरस्कार विजेता साहित्यकार वी.एस. नायपॉल, वेस्टइंडीज के क्रिकेटर शिव नरैन चंद्रपॉल और रामनरेश सरवन भारत से गये अनुबंधित मजदूरों के वंशज थे।
- 20वीं सदी के शुरूआती सालों से ही हमारे देश के राष्ट्रवादी नेता इस प्रथा का विरोध करने लगे थे।
- उनके अनुसार यह बहुत अपमानजनक और क्रूर व्यवस्था थी।
- इसी दबाव से 1921 में इसे खत्म कर दिया गया।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q गिरमिटिया मजदू
किस प्रकार का शोषण झेला?



- फिर भी कई दशकों तक भारतीय मजदूरों के वंशज कैरेबियन द्वीप समूह में अल्पसंख्यकों का बैचेन जीवन जीते रहे।
- वहां के लोग उन्हें 'कुली' मानते थे और उनके साथ कुलियों जैसा बर्ताव करते थे।
- नायपॉल के उपन्यासों में विछोह और परायेपन के अहसास को खूब देखा जा सकता है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

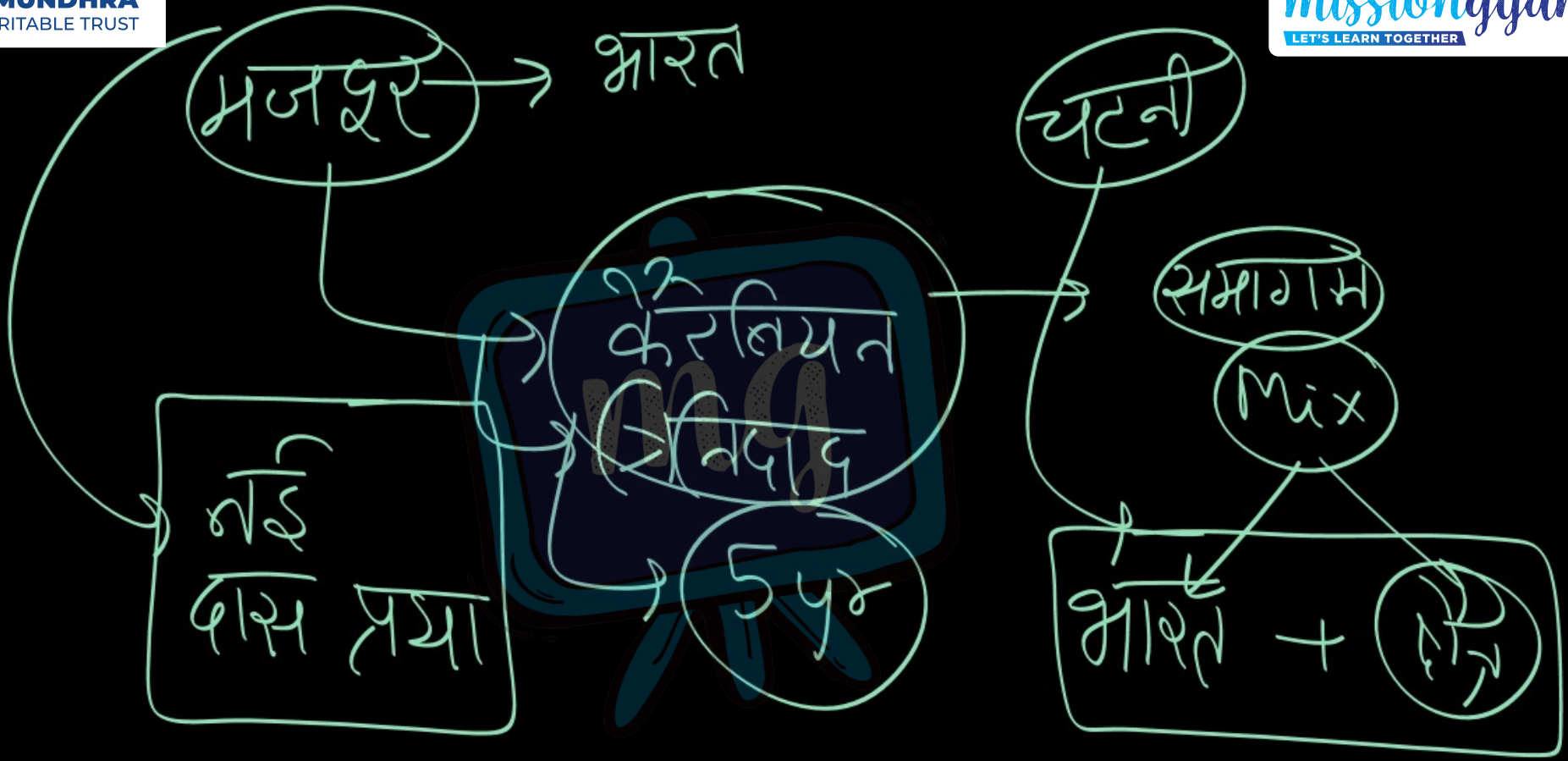

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



विदेश में भारतीय उद्यमी

- विश्व बाजार के लिए खाद्य पदार्थ तथा फसलें उगाने के लिए पूंजी की आवश्यकता थी।
- बड़े बागानों के लिए तो बाजार व बैंकों से पैसा मिल जाता था।
- लेकिन छोटे किसानों के लिए तो साहूकार व महाजन ही थे।
- शिकारी पूरी श्रॉफ और नट्टूकोट्टई चेट्टियार ऐसे बैंकर तथा व्यापारी थे जो मध्य एवं दक्षिण पूर्वी ऐशिया में निर्यात की जाने वाली खेती के लिए कर्जे देते थे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- इसके लिए या तो वे अपनी जेब से पैसा लगाते थे या यूरोपीय बैंकों से कर्जे लेते थे।
- उनके पास दूर-दूर तक पैसे पहुंचाने की एक व्यवस्थित पद्धति होती थी।
- उन्होंने देशी-स्वरूप के व्यावसायिक संगठन विकसित कर लिये थे।
- अफ्रीका में यूरोपीय उपनिवेशकारों के पीछे पीछे भारतीय व्यापारी और महाजन भी जा पहुंचे।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

बंदरगाह कराची

- हैदराबादी सिंधी व्यापारी तो उनसे ही आगे जा निकले। उन्होंने 1860 के दशक में ही दुनिया भर के बंदरगाहों पर अपने बड़े-बड़े एम्पोरियम खोल लिये।
- इन दुकानों से सैलानियों को आकर्षक स्थानीय और विदेशी चीजें मिलती थी।
- यह एक फलता फूलता कारोबार था क्योंकि सुरक्षित और आरामदेह जलपोतों के आ जाने से सैलानियों की संख्या भी दिनों दिन बढ़ने लगी थी।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

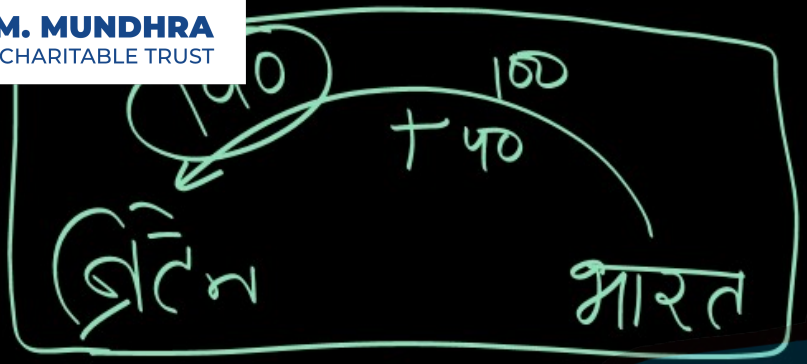

Q. 1870 के दशक में महीन कपास का व्यापार भारत में कमजोर क्यों हो गया?

भारतीय व्यापार

- प्राचीन काल से ही भारत में पैदा होने वाली महीन कपास का यूरोपीय देशों को निर्यात किया जाता था।
- इसी कारण वहाँ के उद्योगपतियों ने सरकार पर दबाव डाला कि वह कपास के आयात पर रोक लगाकर स्थानीय उद्योगों की रक्षा करे।
- फलस्वरूप ब्रिटेन में आयतित कपड़ों पर सीमा शुल्क थोप दिये गये। वहां महीन भारतीय कपास का आयात कम होने लगा।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



(ईस्ट इंडिया कंपनी हाउस, लंदन)

ईस्ट इंडिया कंपनी के दुनिया भर में चलने वाले कार्यों का केन्द्र यहीं था।

- सीमा शुल्क के कारण ब्रिटिश बाजार से बेदखल हो जाने के कारण भारतीय कपड़ों को दूसरे देशों में भी भारी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा।
- इससे भारतीय सूती कपड़ों का निर्यात लगातार गिरता चला गया।
- सन् 1800 के आसपास जहाँ कुल निर्यात में सूती कपड़े का निर्यात 30 प्रतिशत था जो 1815 में घटकर 15 प्रतिशत ही रह गया था तथा यह अनुपात 1870 तक तो केवल 3 प्रतिशत ही रह गया था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER







फिर भारत ने किन चीजों का निर्यात किया?

- जिस तेजी से भारत में निर्मित चीजों का निर्यात घटता जा रहा था उतनी ही तेजी से कच्चे मालों का निर्यात बढ़ता जा रहा था।
- 1812-1871 के बीच कच्चे कपास का निर्यात 5 प्रतिशत से बढ़कर 35 प्रतिशत तक पहुंच गया था।
- कपड़ों की रंगाई के लिए इस्तेमाल होने वाले नील का भी कई दशक तक बड़े पैमाने पर निर्यात होता रहा।
- 1820 के दशक से चीन को बडी मात्रा में अफीम का निर्यात किया जाने लगा।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- कुछ समय तक तो भारतीय निर्यात में अफीम का हिस्सा ही सर्वाधिक था।
- ब्रिटेन की सरकार भारत में अफीम की खेती करवाती थी और उसे चीन को निर्यात करके उससे जो पैसा मिलता था उसके बदले में चीन से चाय तथा दूसरे पदार्थों का आयात किया जाता था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. भारत किन चीजों का निर्यात किया करता था?

कपड़ा व्यापार

→ काफी व्यास + अफीम +

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



व्यापार अधिशेष

भारत < ब्रिटेन

ब्रिटेन का व्यापार अधिशेष :-

- 19वीं सदी में भारतीय बाजारों में ब्रिटिश औद्योगिक उत्पादों की बाढ़ सी आ गई थी।
- भारत से भी ब्रिटेन को भेजे जाने वाले खाद्यान्न तथा कच्चे मालों के निर्यात में वृद्धि हुई थी।
- ब्रिटेन से जो माल भारत आता था उसकी कीमत भारत से ब्रिटेन जाने वाले माल की कीमत से बहुत ज्यादा होती थी।
- अतः भारत के साथ ब्रिटेन हमेशा व्यापार अधिशेष की अवस्था में रहता था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q भारत के साथ ब्रिटेन के व्यापार अध्यादेश के बारे में बताइये?

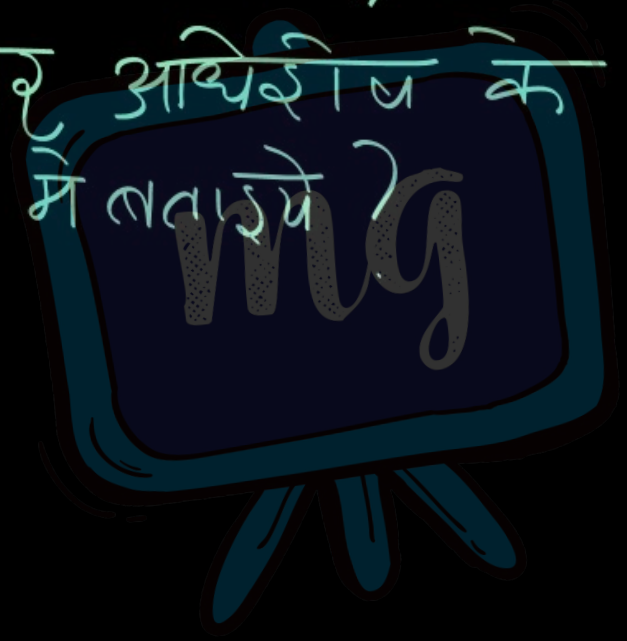

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

व्यापार से मुनाफा

अन्य देशों के साथ व्यापारिक घाटे की भरपाई

- यानि इस आपसी व्यापार में हमेशा ब्रिटेन को ही फायदा रहता था।
- इस मुनाफे के सहारे ब्रिटेन दूसरे देशों के साथ होने वाले व्यापारिक घाटे की भरपाई कर लेता था।
- बहुपक्षीय बंदोबस्त ऐसे ही काम करता है जिसमें यदि एक देश को दूसरे देश के साथ व्यापार में घाटा हो रहा हो तो वह उसकी भरपाई तीसरे देश से मुनाफा कमा कर करता है।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

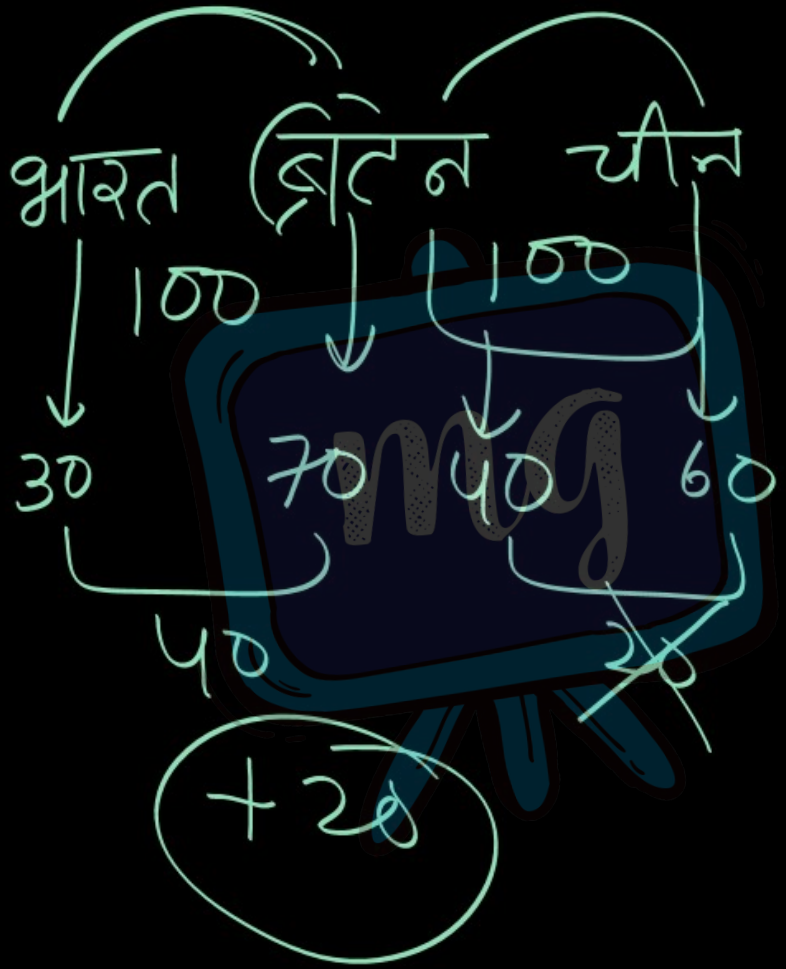

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

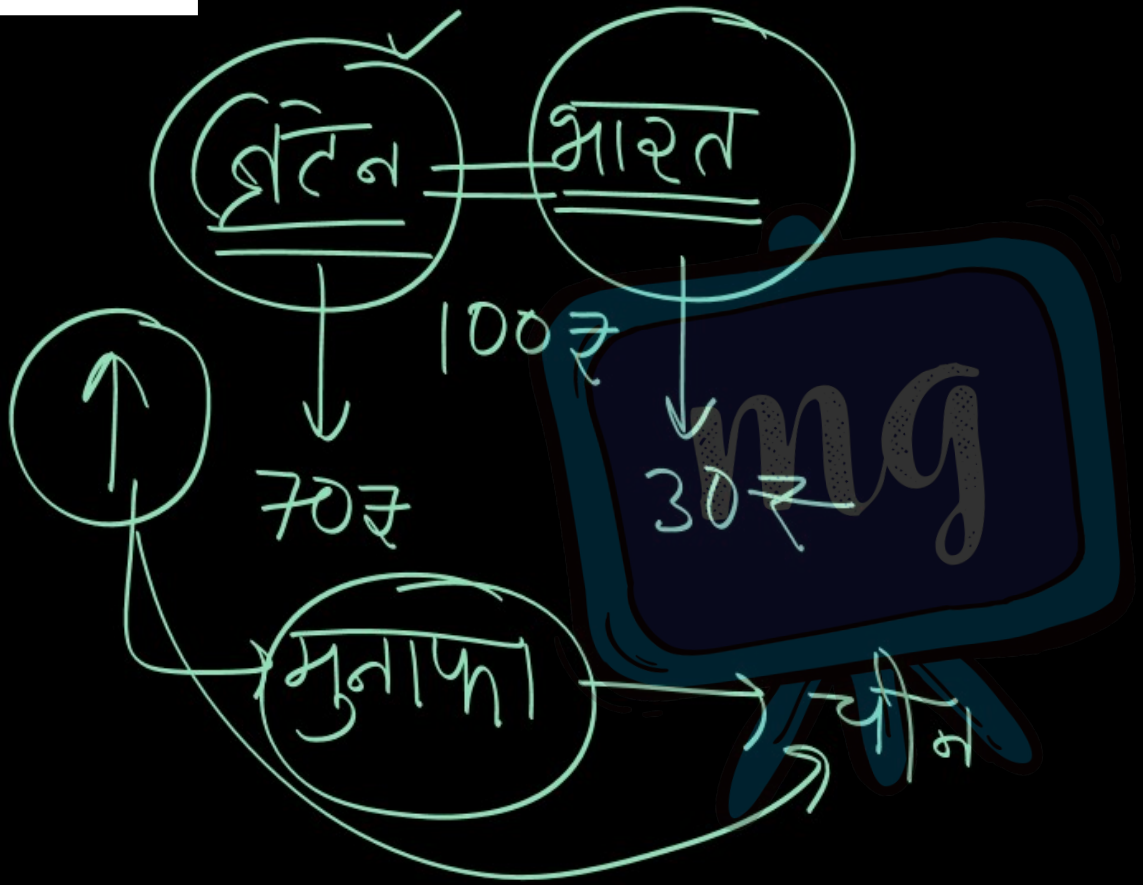

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

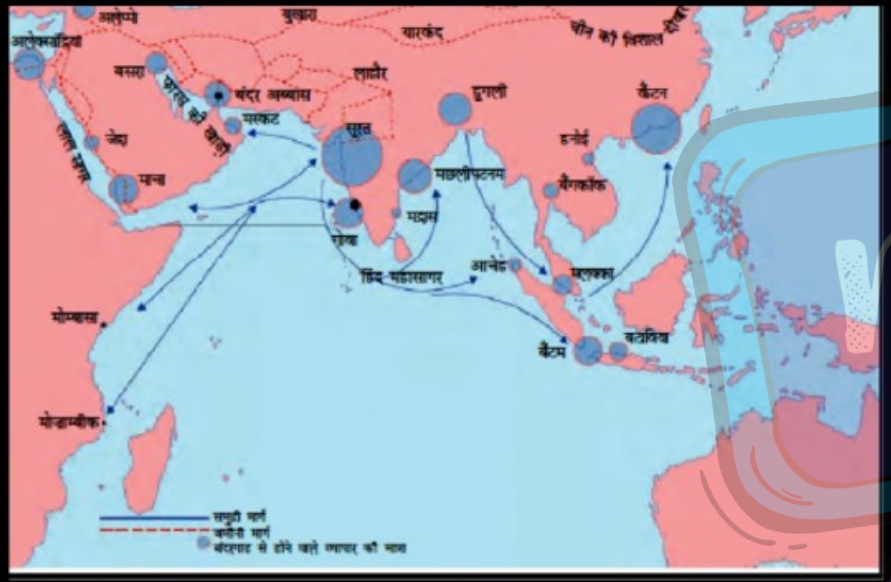

- ब्रिटेन को व्यापार से जो अधिशेष हासिल होता था उससे 'होम चार्जेज' (देशी खर्चे) पूरे होते थे।
- इसके तहत (1) ब्रितानी अफसरों और व्यापारियों द्वारा अपने घर भेजी गई निजी रकम (2) पूर्व ब्रितानी अफसरों की पेंशन तथा (3) भारतीय बाहरी कर्जे पर ब्याज को चुकाया जाता था।

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

1914 - 18

महायुद्धों के बीच अर्थव्यवस्था

पहला विश्व युद्ध



युरोप → 30 साल आर्थिक राजनीतिक स्थिरता लाने मे !

SMT. C.M. MUNDHRA
MEMORIAL CHARITABLE TRUST

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

युद्धकालीन रूपांतरण



प्रथम विश्व युद्ध

- मित्र राष्ट्र
  - ब्रिटेन
  - फ्रांस
  - रूस
- केन्द्रीय शक्तियां
  - जर्मनी
  - ऑस्ट्रिया
  - ऑटोमन

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- मानव सभ्यता के इतिहास में ऐसा भीषण युद्ध पहले कभी नहीं हुआ था।
- इस युद्ध में दुनिया के सबसे अग्रणी औद्योगिक राष्ट्र एक दूसरे से जूझ रहे थे।
- शत्रुओं को नेस्तनाबूद करने के लिए उनके पास बेहिसाब औद्योगिक शक्ति इक्ट्ठा हो चुकी थी।
- इस युद्ध में मशीनगनों, टैंकों, हवाई जहाजों और रासायनिक हथियारों का भयानक पैमाने पर इस्तेमाल किया गया था।
- ये सभी चीजें आधुनिक विशाल उद्योगों की देन थी।